तुलसी की रामकथा के नारी पात्र

डॉ. संध्या गर्ग,

एसोसिएट प्रोफेसर,
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय

मध्यकाल यदि भारतीय साहित्य का स्वर्णयुग है तो तुलसी उस युग के युगनायक हैं, इसमें संदेह नहीं। राजसत्ता के संघर्ष, विदेशी जातियों के आक्रमण की प्रक्रिया में पिसती हुई जनता को तुलसी ने धर्म की जो मरहम दी उससे इनकार नहीं किया जा सकता। महाकवि तुलसी का धर्मनेता के इस रूप के साथ जुड़ा एक अन्य रूप है उनके सामाजिक चिंतक का। जॉर्ज ग्रियर्सन ने उन्हें सर्वश्रेष्ठ सुधारकों और महाकवियों में से एक कहा तो बिनोवा भावे ने उन्हें उत्तर भारत में महात्मा बुद्ध के बाद का लोकनायक कहकर संबोधित किया है। शैव, शाक्त, वैष्णव, द्वैत, अद्वैत आदि सभी मतों में तुलसी ने समन्वय का प्रयास तो किया ही, हिन्दू समाज के विभिन्न अंगों पर भी उनकी लेखनी चली है। ऐसे में समाज के आधे भाग स्त्रीवर्ग के प्रति वे मौन रह जाते, ये संभव ही न था। तुलसी की रामकथा के नायक भले ही राम हैं, लेकिन पूरी कथा की नियामिका और घटनाकर्म की संचालिकाएँ स्त्रियाँ ही हैं। तुलसी की रामकथा में जिस समाज, जाति और जीवन–व्यवस्था का चित्रण हुआ है उसी के अनुरूप ही उनके नारी पात्र दिखाई देते हैं। सीता, कौशल्या, कैकई, शूर्पनखा, मंथरा महत्त्वपूर्ण पात्र हैं तो सुमित्रा, सुनयना, अहिल्या, उर्मिला, मांडवी, श्रुतकीर्ति, शबरी व तारा जैसे गौण पात्रों की संख्या भी कम नहीं है।

सर्वप्रथम सीता की चर्चा करना समीचीन होगा। रामकाव्य परंपरा में तुलसी ने राम के चरित्र को जिस उत्कर्ष और संपूर्णता के साथ प्रस्तुत किया है वह तो अतुलनीय है ही, सीता के चरित्र को भी उदात्त स्वरूप दिया है। बरवै रामायण, जानकीमंगल, कवितावली, गीतावली, विनय पत्रिका और मानस में सीता को जगत् जननी का रूप दिया है। वे नारी शक्ति का सजीव रूप हैं, जो सक्षम है, संकल्प को क्रियान्वित करने की क्षमता रखती है, लेकिन दूसरी ओर वे मर्यादा और सामाजिक रीति के अनुरूप नारीसुलभ लज्जा को भी नहीं छोड़ती है। राम के प्रथम दर्शन में 'लोचन मग रामहिं उर आनि। दीन्हें पलक कपट सयानी।।' कहकर तुलसी स्त्रीसुलभ संकोच और मन में प्रेम के उद्‌भव का बहुत ही सुंदर संकेत करते हैं। पूजा के समय देरी होने पर माँ के क्रोध का भय, विवाह के अवसर पर धनुर्भंग के लिए राम की सहायता हेतु गौरी शंकर से प्रार्थना करती हुई वे कोई सामान्य युवती दिखाई देती हैं, तो वहीं वनगमन के प्रसंग में पति के साथ जाने के लिए दृढ़ संकल्प, कौशल्या को दिलासा देती सीता का एक अलग ही रूप दिखाई देता है। 'पिय वियोग सम दुख जग नाहीं' कहकर वह दाम्पत्य संबंधों के प्रति अपनी दृढ़ आस्था को संकेतित करती हैं। मध्ययुगीन नारी की परिवार, समाज, धर्म संबंधी आस्थाओं को सीता में सजीव देखा जा सकता है। पति का साथ देने से पिता भी प्रसन्न हैं। जनक कहते हैं 'पुत्री पवित्र किए कुल दोऊ'। रावण द्वारा हरण होने पर वे अपना 'पट' और आभूषण मार्ग में फेंकती जाती हैं ताकि राम उन्हें ढूंढें तो सहायता मिल जाए। यह उनके बौद्धिक चातुर्य का ही परिचायक है। सीता स्त्री सशक्तिकरण का सबल उदाहरण दिखती हैं जब

वे रावण के अशोक वाटिका में हैं। रावण के समक्ष वे एक क्षण के लिए भी अपना तेज नहीं छोड़तीं और न ही उसके प्रलोभनों से विचलित होती हैं। हनुमान के प्रति वे पहले सशंक हैं, जो एक बार फिर से नारी स्वभाव की अतिरिक्त सचेतता की ओर ही संकेत करना है। रावण की मृत्यु के बाद राम से भेंट में वे संयत दिखाई देती हैं। अग्नि परीक्षा को वे एक चुनौती की तरह लेती हैं। वस्तुतः सीता के रूप में तुलसी एक ऐसी नारी का चित्र प्रस्तुत करते हैं, जो गरिमामयी हैं, ममता से पूर्ण हैं, आत्मसम्मान के लिए बड़ी से बड़ी चुनौती का सामना करती हैं, विनय, तर्क और भावुकता का अद्‌भुत समन्वय हैं। और इसीलिए विश्व–वंदनीय भी हैं।

सीता के अतिरिक्त कैकई व कौशल्या भी रामकथा की प्रमुख नारी पात्र हैं। कैकई तत्कालीन उत्तराधिकार संघर्ष को प्रस्तुत करती हैं। जब पटरानी के अतिरिक्त अन्य रानियाँ अपनी संतानों के लिए उत्तराधिकार हेतु षड्‌यंत्र करती थीं। रामकथा के ये दोनों पात्र मातृवर्ग के हैं। मानस में वर्णित कैकई निंद्य है। पुत्रप्राप्ति के यज्ञ के समय पायस के विभाजन में भी वह चातुर्य और भेदभाव से भरी दिखाई देती हैं। आरंभ में वह राम के प्रति स्नेहमयी और सहज है पर राम के राजतिलक को कौशल्या के महत्व में वृद्धि से जोड़ने पर वह ईर्ष्या और क्रोध की सजीव मूर्ति बन जाती है। भविष्य में अपमानित होने की संभावना उसे रामकथा की उस निर्णायक घटना का सूत्रधार बना देती है। राम के पूछने पर वह निसंकोच अपने वर मांगने की घटना बताते हुए उसे ही यह अनुरोध करती है कि उन्हें पिता के सम्मान की रक्षा करनी चाहिए। कैकई का यह चित्र तुलसी के समय के समाज में सपत्नी के साथ रहने वाली स्त्री की मनोदशा का चित्र है।

कैकई यदि उस समय की सामान्य स्त्री है तो कौशल्या वह स्त्री है जो तुलसी को काम्य है। मातृत्व का जो रूप भारतीय संस्कृति और परंपरा की देन है वह कौशल्या में मूर्तिमान है। तुलसी 'गीतावली' में उन्हें यशोदा के समान 'पालने रघुपतिहिं झुलावैं' में मग्न दिखाते हैं तो मानस में वे राम के विष्णुत्व से परिचित हैं। 'माता पुनि बोलि, सो मति डोलि, तजहु तात यह रूपा' पर फिर भी वह राम के वनगमन को सुनकर सहम जाती हैं– 'सहमि सूखि सुनि सीतल बानि। जिमि जवास जरें पावस पानि।।' यह एक माँ का हृदय है जो संतान के प्रति चिंतित है। भरत के प्रति भी उनके मन में कोई रोष नहीं है। वह आदर्श पत्नी भी हैं।

मंथरा समाज के संभ्रांत वर्ग से नहीं हैं। वह दासी है। यथार्थ की सोच और स्वामीभक्ति उसके दो प्रबल गुण हैं। अपनी स्वामिनी के हित की कामना से ही वह उसे वर में भरत का राज्याभिषेक और राम का वनवास मांगने का सुझाव देती है। उसका काम ही है कि वह कैकई की स्थिति को सुदृढ़ करे। राम के राज्याभिषेक पर राज्य के लोगों के उत्साह का वर्णन करके वह कैकई को क्रोध दिलाना चाहती है। लेकिन कैकई उसे ही दोष देती है– 'पुनि अस कबहुँ कहब घर खोरी। तब धरि जीभ कड़ावऊँ तोरी।।' लेकिन बाद में कौशल्या का महत्व बढ़ने की बात कहकर वह कैकई को उस मनस्थिति में ले आती है कि वह भरत के लिए राज्य मांग ले। दशरथ की मृत्यु का उसे शोक नहीं है बल्कि वह भावी नरेश भरत के आगमन को लेकर प्रसन्न है। उसे कुबुद्धि, कुटिल और षड्‌यंत्रकारी कहा गया है। लेकिन देखा जाए तो वह सेविका का धर्म और स्वामिभक्ति ही निभा रही है।

एक अन्य पात्र है शूर्पनखा जो राक्षस जाति की है और रावण जैसे महाबली की बहन है। उसका चरित्र और उसकी नाक कटने की घटना राम के राक्षसी आतंक को समाप्त करने के मिशन का प्रारंभ बनती है। तुलसी ने शूर्पनखा को ऐसी स्त्री क रूप में चित्रित किया है जो अत्यंत महत्वाकांक्षी है, भोग–विलास के परे जिसकी सोच

नहीं जाती, अत्यंत स्वतंत्र मस्तिष्क की यह युवती अपने पूरे कुल के नाश का कारण बनती है। वस्तुतः तुलसी की मंशा फिर से स्त्री के आदर्श रूप की स्थापना ही है। शूर्पनखा के चित्रण द्वारा वो संभवतः यही कहना चाहते हैं कि जहाँ स्त्री अपने नैतिक मूल्यों से गिरती है, उसका पतन निश्चित है।

इसके अतिरिक्त रामकथा में गौण स्त्री पात्र हैं– सुमित्रा (लक्ष्मण व शत्रुघ्न की माता); सुनयना (जनक की पत्नी; उर्मिला (लक्ष्मण की पत्नी); मांडवी (भरत की पत्नी); श्रुतिकीर्ति (शत्रुघ्न की पत्नी); अरुंधति (वशिष्ठ की पत्नी); अनुसूया (अत्री ऋषि की पत्नी); अहिल्या (गौतम की पत्नी); मंदोदरी (रावण की पत्नी); सुलोचना (मेघनाद की पत्नी); तारा (सुग्रीव की पत्नी); शबरी (तपस्विनी); त्रिजटा (रावण की सेविका); सुरसा, ताड़का और लंकिनी (निशाचरी)। रामकथ में इन स्त्री पात्रों की भूमिका गौण है पर कथा के प्रतिस्थापन के लिए ये आवश्यक हैं। लक्ष्मण को लक्ष्मण बनाने में उर्मिला के त्याग को नकारना कठिन है। जबकि तुलसी ने उर्मिला को बहुत महत्व नहीं दिया। वास्तव में तुलसी प्रत्येक पात्र को रामभक्ति के लक्ष्य को पूरा करने में सहायक मानते हैं। सुमित्रा भी कहती हैं– 'पुत्रवती जुवती जग सोई। रघुपति भगत जासु सुत होई।।' अनुसूया सीता को नारी धर्म के उपदेश देती है। जो कि परंपरागत भारतीय समाज से ही उद्‌भूत हैं। पति कैसा भी हो उसकी सेवा न करने वाली स्त्री नर्क पाती है, यह धारणा मध्यकालीन स्त्री की सामाजिक स्थिति को स्पष्ट कर देती है। इसी प्रकार अहिल्या प्रसंग को भी बहुत अधिक विस्तार नहीं दिया है। तुलसी काव्य में अहिल्या राम की महिमा प्रदर्शन का माध्यम बनकर रह गई हैं। जबकि वे स्त्री के अस्तित्व चिंतन का एक बड़ा उदाहरण हो सकती थीं। शबरी वन्य जाति की हैं और अपनी मुक्ति के लिए राम की प्रतीक्षा कर रही हैं। मंदोदरी रावण की पत्नी हैं और विवेकशील हैं। वे रावण को उसके कृत्यों के प्रति सचेत करती हैं। बाकी तो नारीपात्र तुलसी की रामभक्ति के दुराग्रह के कारण अपना महत्व खो बैठे हैं।

तुलसी साहित्य में स्त्री कहीं–कहीं ही शक्तिशाली और सक्रिय दिखाई दी है। वस्तुतः तुलसी का उद्देश्य राम की विष्णु रूप में प्रतिष्ठा है अतः उन्होंने स्त्री चरित्रों को बहुत अधिक महत्व नहीं दिया। इस संदर्भ में मर्यादा की बात करने वाले तुलसी भरत द्वारा मातृनिंदा और मंदोदरी द्वारा पतिनिंदा को भी सही ठहरा देते हैं। रामत्व और रावणत्व यदि अच्छाई और बुराई के दो सीमांत माने जाएँ तो तुलसी के नारी पात्र इन दो सीमांतों के बीच ही उलझ कर रह गए हैं। उनका परिचय किसी की पत्नी और किसी की माता होना ही है। कौशल्या और कैकई में सपत्नी द्वेष का ही झगड़ा है, अन्य कुछ नहीं। राम वनवास केवल कैकई का दुराग्रह नहीं है बल्कि अपनी शक्ति और महत्व के घट जाने के भय का भी परिणाम है। दशरथ का बहुपत्नीत्व और सीता के पतिव्रत धर्म पर संदेह एक साथ इस समय के समाज की देन है।

तुलसी साहित्य केवल साहित्य मात्र नहीं है। वह अपने समय के समाज, जाति, देश के सामाजिक व वैचारिक परिप्रेक्ष्य को समेटे हुए एक इतिहास भी है। समाज के इतिहास में नारी सर्वाधिक प्रभावित हुई। उसका अधिकार पुरुष का दान रहा है। और तुलसी की रामकथा में नारी जाति के इस इतिहास और मध्यकाल में सामाजिक स्थिति को नारी पात्रों के माध्यम से वाणी मिली है इसमें संदेह नहीं।

Copyright © 2016, Dr. Sandhya Garg. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.